अव्यक्त मिलन की आकर्षण से नियमों का बंधन निभाने में सहयोग

आज बापदादा के पास गई तो बापदादा ने बहुत स्वीट डीप साइलेन्स के रूप में मुस्कराते हुए मिलन मनाया। मैं भी उसी मीठी साइलेन्स की स्थिति में लीन हो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज तो मधुबन की मीटिंग का समाचार लाई हूँ और सब मीटिंग वालों की विशेष याद-प्यार लाई हूँ। दादी जी ने भी विशेष प्रेम सम्पन्न याद दी है। ऐसे सुनते ही ऐसा लगा जैसे बाबा वतन में होते भी कहाँ और हैं और ऐसे अनुभव हुआ कि दादी जी से ही रूहरूहान और मिलन मना रहे हैं।

कुछ समय बाद बाबा ने हमसे दृष्टि के इशारे से समाचार पूछा, हमने सुनाया कि बाबा आज साइंस के साधन द्वारा जो हर जगह बाबा के मिलन और मुरली देखी सुनी है तो सबको बहुत अच्छा लगा है और सब चाहते हैं ऐसे ही देखें। बापदादा बहुत-बहुत मुस्कराये और बोले, बच्चे खुश होते हैं तो बहुत अच्छी बात है लेकिन बच्चे बापदादा का पार्ट तो गुप्त-ही-गुप्त हो रहा है। ब्रह्मा तन में भी कोई भाग्यवान पहचान सके। अब अव्यक्त पार्ट को तो कोटों में कोई, कोई में भी कोई जान पहचान सकता, इसलिए बापदादा के मिलन की आकर्षण मधुबन में ही शोभा देती है और नियम मर्यादा की लकीर भी मधुबन में ही हो सकती है। इस आकर्षण के बल, हिम्मत से पवित्रता और सर्व नियमों का बन्धन निभाने में बच्चों को सहयोग और सहज होता है। इसलिए इस गुप्त पार्ट को, जैसे चल रहा है ऐसे विधि से रखना अच्छा है।

बाकी दूसरी-दूसरी बातें तो छोटी-छोटी हैं, जो भी मर्यादा को लूज़ करने

वाली हैं। लेकिन बापदादा जानते हैं कि इन साइंस के साधनों से आगे चलकर प्रत्यक्षता का पार्ट होना है लेकिन अभी इस समय ऐसे पहचान वाली धरनी नहीं बनी है, जो जैसा पार्ट है वैसे उसको पहचान सकें, अभी मिक्स है। इसलिए कुछ समय अब मर्यादा पालन करने का भाग्य आत्माओं को देने दो। उसके बाद बाबा ने सर्व मीटिंग में आये हुए मधुबन के बच्चों को बहुत-बहुत दिल से याद-प्यार दी और यही महावाक्य उच्चारे कि मधुबन निवासियों की जिम्मेवारी का ताज बहुत-बहुत बड़ा है। हर एक मधुबन के निमित्त बच्चों को हर कदम में यही याद रहे कि जो हम कदम उठायेंगे, हमें देख और करेंगे। इसलिए एकनामी, एकॉनामी से मधुबन सेवा को आगे बढ़ाते रहो।